17 फरवरी 2010, कुल पृष्ठ : 8, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

जैन
पथप्रदर्शक

ए-4, बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)

नैतिक एवं सामाजिक चेतना का अग्रदूत निष्पक्ष पाक्षिक

आत्मानुभूति में पर के सहयोग का विकल्प बाधक ही है; साधक नहीं।

- मैं कौन हूँ ?, पृष्ठ-12

वर्ष : 32, अंक : 22 सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** आजीवन शुल्क : 251 रुपये

फरवरी (द्वितीय), 2010 प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा** वार्षिक शुल्क : 25 रुपये

राघौगढ में डॉ. भारिल्ल की हीरक जयन्ती

राघौगढ-गुना (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 10 फरवरी को मुमुक्षु मण्डल एवं जैन समाज के तत्त्वावधान में अन्तरराष्ट्रीय ख्यातिप्राप्त विद्वान तत्त्ववेत्ता डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल का हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया।

कार्यक्रम के अध्यक्ष श्री मुकेशजी जैन ढाईद्वीप जिनायतन इंदौर एवं मुख्यअतिथि विधायक श्री मूलसिंहजी दादाभाई थे। विशिष्ट अतिथि के रूप में जैन समाज के उपाध्यक्ष श्री अशोकजी भारिल्ल, श्री चांदमलजी संघवी इंदौर, श्री आनंदकुमारजी पाटनी इंदौर, श्री विजयकुमारजी पत्रकार एवं श्रीमती रामबाई (अध्यक्ष-नगरपालिका राघौगढ) आदि मंचासीन थे।

इस अवसर पर सर्वप्रथम श्री शिवरतनजी जैन (अध्यक्ष - श्री आदिनाथ जिनालय) ने डॉ. भारिल्ल का शॉल एवं श्रीफल भेंट कर सम्मान किया तथा अभिनंदन-पत्र का वाचन डॉ. अजितजी रावत ने किया। साथ ही जैन मिलन, महासमिति, श्वेताम्बर समाज, नगरपालिका, वीर सेवादल, जैन समाज आदि ने भी डॉ. भारिल्ल का सम्मान किया। कुंभराज मुमुक्षु मण्डल की ओर से भी डॉ. साहब का शॉल व श्रीफल भेंटकर अभिनंदन किया गया। श्रीमती गुणमाला भारिल्ल का स्वागत महिला मुमुक्षु मण्डल की ओर से किया गया।

मंच संचालन श्री प्रेमचंदजी भारिल्ल ने एवं आभार प्रदर्शन श्री शिवरतनजी जैन ने किया।

जयपुर में धर्म प्रभावना

जयपुर (राज.) : यहाँ टोडरमल स्मारक भवन में दिनाँक 21 से 31 जनवरी तक दोनों समय ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला तथा दोपहर में आपके द्वारा वर्तमान छात्रों के लिये व्यक्तित्व विकास, स्वास्थ्य संरक्षण आदि विषयों पर विशेष कक्षा ली गई। जयपुर में रहनेवाले महाविद्यालय के भूतपूर्व छात्रों के लिये एक दिन 'आराधना और प्रभावना' विषय पर विशेष उद्बोधन दिया गया। रात्रि में ब्र. सुमतप्रकाशजी के प्रवचनों के पश्चात् डॉ. हुकमचंदजी भारिल्ल के समयसार की गाथा 74 पर मार्मिक प्रवचनों का लाभ मिला।

इस अवसर पर श्री टोडरमल दि. जैन सिद्धान्त महाविद्यालय के विद्यार्थियों के अतिरिक्त जयपुर शहर के लगभग 200 लोगों ने लाभ लिया।

अन्तिम दिन अ.भा.जैन युवा फैडरेशन जयपुर महानगर द्वारा सांगानेर संघीजी के मंदिर में शांति विधान का आयोजन किया गया, इस अवसर पर ब्र. सुमतजी के प्रवचन का भी लाभ मिला। अनेक नये लोगों ने जीवन में पहली बार ही तत्त्व की बात रुचिपूर्वक सुनी। आयोजन से महती धर्म प्रभावना हुई।

तीर्थधाम सिद्धायतन द्रोणगिरि में -

द्वितीय वार्षिकोत्सव संपन्न

द्रोणगिरि (म.प्र.) : यहाँ स्थित तीर्थधाम सिद्धायतन में दिनाँक 7 से 11 फरवरी तक द्वितीय वार्षिकोत्सव के अवसर पर श्री सिद्धचक्रमहामंडल विधान एवं शिक्षण-शिविर का आयोजन किया गया।

शिविर में डॉ. उत्तमचंदजी सिवनी के समयसार की 19 वीं गाथा के आधार से हुये मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली, पण्डित कोमलचंदजी टडा, पण्डित पीयूषजी शास्त्री जयपुर एवं पण्डित अरुणजी शास्त्री बड़ामलहरा के प्रवचनों एवं कक्षाओं का लाभ मिला। रात्रि में सिद्धायतन के छात्रों द्वारा सांस्कृतिक कार्यक्रम कराये गये।

शिविर का उद्घाटन श्री दीपचंदजी जैन अमरमऊ ने किया। विधानकर्त्ता श्री बाबूलालजी जैन शाहगढ थे। ध्वजारोहण श्री अशोकजी जैन जबलपुर के करकमलों से किया गया।

विधि-विधान के संपूर्ण कार्य ब्र. नन्हे भैया, श्री अभिषेकजी एवं श्री सुमितजी शास्त्री ध्रुवधाम-बांसवाड़ा ने सम्पन्न कराये। कार्यक्रम का संयोजन श्री एम. एल. जैन बड़ामलहरा एवं श्री मस्ताई प्रमोद जैन घुवारा ने किया।

सप्तम वार्षिक महोत्सव संपन्न

मंगलायतन-अलीगढ (उ.प्र) : यहाँ 1 से 6 फरवरी तक सप्तमवार्षिक महोत्सव के अवसर पर 170 तीर्थंकर मंडल विधान का आयोजन हुआ।

इस अवसर पर पण्डित राजेन्द्रकुमारजी जबलपुर एवं ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के समयसार पर दोनों समय मार्मिक प्रवचनों के अतिरिक्त पण्डित वीरेन्द्रजी आगरा, पण्डित संजीवजी गोधा जयपुर, पण्डित अशोकजी लुहाड़िया एवं पण्डित सुधीरजी शास्त्री के विविध विषयों पर प्रवचनों का लाभ मिला।

प्रात: डॉ. राकेशजी शास्त्री द्वारा प्रौढ कक्षा चली। पूजन-विधान के बाद गुरुदेवश्री का सी.डी. प्रवचन चलता था।

विधान के आयोजनकर्ता श्रीमती सुशीलादेवी शांतिलालजी जैन जयपुर तथा वार्षिकोत्सव शिविर के आयोजनकर्त्ता श्री प्रफुल्ल डी.राजा नैरोबी थे।

3 फरवरी को मंगलायतन विश्वविद्यालय में निर्माणाधीन श्री महावीर जिनमंदिर में वेदी शिलान्यास संपन्न हुआ। आयोजित सभा की अध्यक्षता श्री अनंतराय ए. सेठ मुम्बई ने की। मुख्यअतिथि के रूप में श्री जयंतीभाई दोशी मुम्बई मंचासीन थे। कार्यक्रम में वयोवृद्ध विद्वान कैलाशचन्दजी जैन की गरिमामयी उपस्थिति रही। संयोजन व संचालन श्री पवन जैन ने किया।

विधान एवं शिलान्यास के संपूर्ण कार्य प्रतिष्ठाचार्य ब्र.अभिनंदनजी शास्त्री एवं पण्डित संजयजी शास्त्री ने मंगलार्थी छात्रों के सहयोग से संपन्न कराये।

सम्पादकीय – 29

पंचास्तिकाय : अनुशीलन

(गतांक से आगे...) – पण्डित रतनचन्द भारिल्ल

गाथा - 44

विगत गाथा ४३ में कहा है कि – आत्मवस्तु का ज्ञानगुण से पृथक्करण नहीं किया जा सकता; क्योंकि दोनों एक ही अस्तित्व से रचित हैं। न केवल एक ही अस्तित्व से रचित है, बल्कि दोनों के द्रव्य-क्षेत्र-काल भाव भी एक ही है। ऐसी एकता होने पर भी ज्ञान की संज्ञा, संख्या, लक्षण तथा मति-श्रुतज्ञान आदि की अपेक्षा अनेकरूपता है।

इस गाथा में कहते हैं कि – द्रव्य का गुणों से भिन्नत्व और गुणों का द्रव्य से भिन्नत्व होने पर जो दोष आता है, वह दोष क्या है, यह यहाँ प्रस्तुत है।

मूलगाथा इस प्रकार है –

जदि हवदि दव्वमण्णं गुणदो य गुणा य दव्वदो अण्णे।
दव्वाणंतियमधवा दव्वाभावं पकुव्वंति ।।४४।।

(हरिगीत)

द्रव्य गुण से अन्य या गुण अन्य माने द्रव्य से।
तो द्रव्य होय अनंत या फिर नाश ठहरे द्रव्य का।।४४।।

इस ४४वीं गाथा में आचार्य कुन्दकुन्द देव कहते हैं कि यदि द्रव्य गुणों से अन्य (भिन्न) हो और गुण द्रव्य से अन्य (भिन्न) हों तो या तो द्रव्य की अनन्तता का प्रसंग प्राप्त होगा या फिर द्रव्य के अभाव का प्रसंग प्राप्त होगा, जो संभव नहीं है।

आचार्य अमृतचन्द्र इसकी टीका करते हुए कहते हैं कि – द्रव्य का गुणों से भिन्नत्व मानोगे और गुणों का द्रव्य से भिन्नत्व मानोगे तो जो दोष आता है, उस दोष का उल्लेख इस गाथा में किया है।

गुण वास्तव में द्रव्य के आश्रय होते हैं। यदि वह द्रव्य गुणों से भिन्न हो तो फिर गुण किसके आश्रित होंगे? वे गुण जिसके आश्रित होंगे वह भी तो द्रव्य ही है। इसतरह तो अनवस्था दोष का प्रसंग प्राप्त होगा।

वास्तव में द्रव्य गुणों का ही समुदाय है। गुण यदि अपने समुदाय से अन्य हो तो वह समुदाय कैसा? इसप्रकार यदि गुणों का द्रव्य से भिन्नत्व हो तो या तो द्रव्यों को अनन्तता का प्रसंग प्राप्त होगा या द्रव्य के अभाव का प्रसंग प्राप्त होगा। इस कारण सर्वथा प्रकार से गुण-गुणी का भेद नहीं है। कथंचित् प्रकार से भेद है। गुण अंश है, द्रव्य अंशी है। अंश से अंशी अलग नहीं हो सकता। अंशी के आश्रय ही अंश रहते हैं। द्रव्य से गुण को सर्वथा भिन्न मानोगे तो द्रव्य का अभाव होगा; क्योंकि गुणों के समूह को ही तो द्रव्य कहते हैं। कहा भी है 'गुण समुदायो द्रव्यं' द्रव्य से गुण सर्वथा भिन्न नहीं है।

आचार्य जयसेन के अनुसार – यदि द्रव्यगुणों से सर्वथा अन्य हो तो एकद्रव्य में भेद उत्पन्न हो जायेगा। गुण अंश हैं, गुणी अंशी है। अंश से अंशी अलग नहीं हो सकता। अंशी के आश्रय से ही अंश रहते हैं। दूसरा दोष यह आयेगा कि – द्रव्य का ही अभाव हो जायेगा; क्योंकि द्रव्य गुणों का समूह ही होता है। अतः सर्वथा गुण-गुणी भेद नहीं है।

कविवर हीरानन्दजी काव्य के द्वारा कहते हैं कि –

(दोहा)

दरव आन गुण तैं जबहिं, दरब थकी गुण आन।
तबही दरब अनन्तता, अथवा दरव न जान।।२२७।।

यदि द्रव्य गुणों से अन्य हो या गुण द्रव्य से अन्य हों तो या तो द्रव्य में अनन्तता सिद्ध होगी या फिर द्रव्यों के नाश का प्रसंग प्राप्त होगा।

(सवैया)

गुन द्रव्य आश्रय हैं, आश्रयी कहावै द्रव्य,
दोनों हैं अविनाभावी, जुदा कौन गनै है?
जौ पै जुदा द्रव्य तौ पै गुन और द्रव्य चहै,
सौ भी द्रव्य जुदा गुन और द्रव्य चहै है।।
गुन अर गुनी विषै लसै तादातम संबंध,
भिन्नभाव कै लखत ही, वस्तु न देखै अंध।।२२८।।

कवि उपर्युक्त सवैया में कहते हैं कि – 'गुण द्रव्य के आश्रय होते हैं। अतः द्रव्य आश्रयी कहलाता है। दोनों अविनाभावी हैं। यदि गुण को द्रव्य से अलग करते हैं तो वह गुण अन्य द्रव्य का आश्रय चाहेगा; क्योंकि गुण का आश्रय तो द्रव्य है। इसप्रकार अनावस्था दोष आयेगा। गुण व गुणी में तारतम्य संबंध है, अतः द्रव्य गुण से भिन्न नहीं हो सकता।

(दोहा)

एक कहत बनती नहीं, नहीं अनेक की ठौर।
अनेकान्तमय वस्तु है सिवमारग की दौर।।२२९।।

गुण व गुणी में तादात्म्य संबंध है। जो गुण व गुणी को भिन्न देखते हैं, वे तत्त्वज्ञान से अंध हैं।

गुरुदेव श्रीकानजी स्वामी कहते हैं कि – जिसप्रकार आत्मा से

शरीर जुदा है, वैसे आत्मा और गुण जुदै नहीं हैं। यद्यपि भेद की अपेक्षा संज्ञा, संख्या एवं लक्षण आदि से भेद है; परन्तु गुण-गुणी में सर्वथा प्रकार से भेद माने तो एक द्रव्य के अनन्त भेद (खण्ड) होने का प्रसंग प्राप्त होगा। अथवा गुणों के जुदा करने से द्रव्यों का ही अभाव हो जायेगा। आत्मा त्रिकाली वस्तु है, उसमें ज्ञान-दर्शन आदि गुण हैं। उनमें नाम तथा लक्षण अपेक्षा भेद होने पर भी गुण-गुणी एवं प्रदेश भेद नहीं है।

आत्मा में ज्ञान दर्शन, स्वच्छत्व, विभुत्व कर्त्ता करण वगैरह अनन्ती शक्तियाँ हैं, वे अंश हैं, भेद हैं, अनेक हैं तथा गुणी, अंशी अर्थात् आत्मा एक हैं तथा वह गुणों को आधार देने वाला है। अपने गुणों का आधार शरीर, कर्म आदि पर वस्तु नहीं है। ऐसी अभेद की श्रद्धा कर तो धर्म होता है।

जगत के भोले प्राणी यह मानते हैं कि सच्चे देव-शास्त्र-गुरु की शरण हो, स्वस्थ शरीर हो, एकान्तवास हो, बाहरी सभी प्रकार की अनुकूलता हो तो ही धर्म हो सकता है। इसप्रकार धर्म करने के लिए जो बाहर के द्रव्य क्षेत्र काल भाव की अनुकूलता का कारण मानता है, वह भ्रम में है, क्योंकि वह धर्म का आधार परवस्तु को मानता है, जबकि धर्म का आधार आत्मा है।

इसप्रकार जो व्यक्ति द्रव्य को गुणों से सर्वथा भिन्न या अन्य मानते हैं तथा गुणों को द्रव्य से सर्वथा भिन्न या अन्य मानते हैं, वे भ्रम में हैं; क्योंकि ऐसा मानने पर प्रथम तो वह आत्मा अपने गुणों से अलग होते ही अनन्तता को प्राप्त होगा। या फिर गुणों का समूह आत्मा से अलग होते ही आत्मा गुणहीन हो जाने से आत्मा का अस्तित्व ही नहीं रहेगा; क्योंकि गुणों का समूह ही तो द्रव्य है। कहा भी है - ''गुण समुदायो द्रव्यं''। अतः गुणों का आत्मा से पृथक् होना संभव ही नहीं है।

सम्पूर्ण कथन का सार (तात्पर्य) यह है कि - अपने गुण अपने आत्मा में से ही प्रकट होते हैं - गुण-गुणी में भले लक्षण भेद हों; पर प्रदेशों की अपेक्षा दोनों अभेद हैं। ऐसा गुण-गुणी को अभेद मानकर श्रद्धा करे तो धर्म का प्रारंभ होता है। ●

प्रवचनसार शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर संपन्न

कोटा (राज.) : यहाँ श्री कुन्दकुन्द कहान स्वाध्याय भवन रामपुरा में दिनाँक 18 से 25 दिसम्बर तक अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के तत्त्वावधान में श्री प्रवचनसार शिक्षण-प्रशिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित हेमचंदजी हेम देवलाली द्वारा प्रवचनसार के ज्ञेय तत्त्व प्रज्ञापन अधिकार की गाथा 93 से 100 के आधार पर पदार्थ के द्रव्य-गुण-पर्याय स्वरूप की तर्कसंगत एवं आधुनिक विज्ञान के परिप्रेक्ष्य में सरल व सुबोध शैली में मार्मिक विवेचना की गयी। दोपहर में आचार्य माणिक्यनंदी द्वारा विरचित परीक्षामुख ग्रंथ पर कक्षा ली गयी। **- जिनेन्द्र जैन**

आध्यात्मिक शिविर सानन्द संपन्न

करेली (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 24 से 30 दिसम्बर 2009 तक श्री सीमंधर जिनालय एवं श्री अहिंसा भवन में श्री कुन्दकुन्द कहान दि.जैन स्वाध्याय मंदिर ट्रस्ट एवं अ.भा. जैन युवा फैडरेशन के संयुक्त तत्त्वावधान में द्वितीय आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का भव्य आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री खैरागढ द्वारा जैन सिद्धांत प्रवेशिका, डॉ. मनीषजी शास्त्री खतौली द्वारा क्रमबद्धपर्याय, पण्डित विरागजी मंगलार्थी और श्रीमती श्रुति गिडिया द्वारा अहिंसा-प्रथम एवं पण्डित दिविजजी मंगलार्थी द्वारा अहिंसा-द्वितीय विषयों पर प्रात:, दोपहर, सायं एवं रात्रि में 4-4 घंटे कक्षा ली गई।

शिविर का उद्घाटन नागपुर मुमुक्षु मण्डल के महामंत्री श्री अशोककुमारजी जैन (आमगांव वालों) ने किया। शिविर के अन्तिम दिन डॉ. श्रेयांसजी शास्त्री जबलपुर के मुख्य आतिथ्य में भव्य समापन समारोह आयोजित हुआ, जिसमें सभी परीक्षार्थियों तथा सांस्कृतिक कार्यक्रम व शास्त्र सज्जास्पर्धा के प्रतियोगियों को सम्मानित किया गया।

शिविर से प्रभावित होकर आगामी शिक्षण शिविर हेतु श्री अशोकजी बडकर परिवार ने स्वीकृति दी। शिविर की समस्त गतिविधियाँ पण्डित मनोजजी शास्त्री एवं श्री मुकेशजी जैन के निर्देशन मे संपन्न हुयी।

इस शिविर में करेली के अतिरिक्त जबलपुर, सागर, सिवनी, होशंगाबाद, दमोह एवं शहडोल जिले के लगभग 300 शिविरार्थियों ने लाभ लिया एवं 187 लोगों ने परीक्षा देकर प्रमाण-पत्र प्राप्त किये।

शिविर के समापन के उपरांत करेली मुमुक्षु मण्डल द्वारा सिद्धक्षेत्र द्रोणगिरि सिद्धायतन, सिद्धक्षेत्र नैनागिरि, अतिशय क्षेत्र बीना बारह एवं बंडा के स्वाध्याय मंदिर के दर्शनार्थ विशाल बस यात्रा निकाली गयी, जिसमें 213 शिविरार्थी सम्मिलित हुये, सभी शिविरार्थी बच्चों को नि:शुल्क ले जाया गया।

हार्दिक बधाई !

बेलगांव (कर्नाटक) : श्री टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित राजेन्द्रजी पाटील शास्त्री ने बिहार के मुझफ्फरपुर के डॉ. बी.आर. अम्बेडकर विश्वविद्यालय से प्राकृत एवं जैनशास्त्र विषय की एम.ए. परीक्षा में प्रथम स्थान प्राप्त किया है। भ. महावीर की जन्मस्थली वैशाली वासोकुण्ड ग्राम के राष्ट्रीय प्राकृत, जैनशास्त्र एवं अहिंसा शोध महाविद्यालय ने 27 नवम्बर, 09 को उन्हें **स्वर्ण पदक** प्रदान कर सम्मानित किया।

टोडरमल महाविद्यालय के आप पहले कर्नाटक निवासी स्नातक हैं, जिन्होंने कर्नाटक के लगभग 80 गांवों में जैनधर्म पर प्रवचन एवं सांस्कृतिक कार्यक्रम संपन्न कराये।

वर्तमान में आप श्री श्रवणबेलगोला के बाहुबली प्राकृत विद्यापीठ के अंतर्गत संचालित राष्ट्रीय प्राकृत अध्ययन एवं संशोधन संस्थान में प्राकृत-हिन्दी परीक्षा विभाग के परीक्षा सहायक के रूप में कार्यरत हैं।

श्री टोडरमल महाविद्यालय एवं जैनपथप्रदर्शक परिवार आपके उज्ज्वल भविष्य की कामना करता है। आपको हार्दिक बधाई !

बच्चों ने पतंग न उड़ाने का संकल्प लिया

जयपुर (राज.) : यहां जनवरी माह में अ. भा.जैन युवा फैडरेशन महानगर जयपुर एवं हिन्दी उत्थान परिषद् के संयुक्त तत्त्वावधान में मकर संक्रांति पर बच्चों से चाईनीज मांझे को उपयोग में नहीं लेने की अपील करने संबंधी 2000 पोस्टर श्री संजयजी सेठी एवं श्री भागचंदजी शास्त्री द्वारा तैयार कराकर प्रमुख चौराहों एवं सार्वजनिक स्थानों पर लगाया गया।

टोडरमल महाविद्यालय के प्राचार्य पण्डित रतनचंदजी भारिल्ल ने अपने व्याख्यान में बताया कि हिंसा करके पतंग उड़ाना उचित नहीं है। इसके परिणामस्वरूप टोडरमल महाविद्यालय एवं अन्य स्थानों के लगभग 200 बच्चों ने मकर सक्रांति के अवसर पर पतंग न उड़ाकर इसे अहिंसा दिवस के रूप में मनाया।

ब्र. यशपालजी जैन ने प्रवचन के उपरांत निरीह पक्षियों की अन्य जिले में हुई अकाल मृत्यु के संबंध में जानकारी दी।

इस अवसर पर फैडरेशन के राष्ट्रीय मंत्री एस. पी. भारिल्ल, पण्डित शांतिकुमारजी पाटील, पण्डित संजयजी सेठी, पण्डित पीयूषजी शास्त्री, पण्डित धर्मेन्द्रजी शास्त्री, श्रीमती कमलाजी भारिल्ल, श्री सर्वज्ञ भारिल्ल आदि उपस्थित थे। **– जिनेन्द्र शास्त्री**

आध्यात्मिक शिक्षण-शिविर संपन्न

अजमेर (राज.) : यहाँ गोधों की नसियां में दिनाँक 7 से 9 जनवरी तक त्रिदिवसीय रत्नत्रय विधान एवं आध्यात्मिक शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना, पण्डित जयकुमारजी बारां एवं पण्डित कमलचन्दजी पिड़ावा के प्रवचनों का लाभ प्राप्त हुआ। पूजन विधान के पश्चात् प्रतिदिन प्रात: एवं रात्रि में दो विद्वानों के प्रवचन एवं दोपहर में कक्षा व शंका–समाधान का आयोजन हुआ।

विधान का उद्घाटन श्री नेमीचंद अमितकुमारजी द्वारा, मण्डप उद्घाटन श्री प्रदीपजी चौधरी किशनगढ द्वारा एवं ध्वजारोहण श्री अशोककुमारजी चांदवाड झालरापाटन द्वारा किया गया।

कार्यक्रम में लगभग 500 लोगों ने लाभ लिया। समापन के अवसर पर श्री प्रदीपजी चौधरी, श्री त्रिलोकचंदजी सोनी एवं श्री हीराचंदजी बोहरा द्वारा श्री नेमीचंद अमितकुमारजी बड़जात्या परिवार सूरत का हार्दिक आभार व्यक्त किया गया।

दिनाँक 10 से 16 जनवरी तक **वीतराग–विज्ञान स्वाध्याय मंदिर** ट्रस्ट पुरानी मण्डी में ब्र.सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के प्रात: एवं रात्रि में प्रतिदिन प्रवचनों का लाभ स्थानीय समाज को प्राप्त हुआ। कार्यक्रम का संयोजन श्री प्रकाशचंदजी पाण्ड्या एवं सांस्कृतिक कार्यक्रमों व मंच का संचालन श्री अमितकुमारजी बड़जात्या द्वारा किया गया।

ज्ञातव्य है कि दिनांक 16 से 21 जनवरी तक **किशनगढ** में ब्र. सुमतप्रकाशजी खनियांधाना के दोनों समय प्रवचनों का लाभ मिला।

– विजयकुमार पाण्ड्या

भेद-विज्ञान एवं बाल संस्कार शिविर

सागर (म.प्र.) : यहाँ दिनाँक 6 से 12 जनवरी तक श्री तारण तरण दि.जैन समाज के तत्त्वावधान में ग्यारहवाँ भेद–विज्ञान एवं बाल संस्कार जागृति शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा के दोनों समय समयसार, नियमसार एवं पंचास्तिकाय पर मार्मिक व्याख्यान हुये। पण्डित संयमजी शास्त्री ने सर्वार्थसिद्धि पर प्रवचन एवं प्रौढ कक्षा का कुशल संचालन किया तथा अंतिम दिन युवाओं को प्रेरणा देने हेतु विशेष व्याख्यान दिया। पण्डित सजलजी शास्त्री द्वारा तारणस्वामी विरचित श्री ममल पाहुड पर प्रवचन हुये एवं सायंकालीन बालकक्षाओं का संचालन किया गया।

स्थानीय विद्वानों में पण्डित अरुणकुमारजी मोदी, पण्डित शिखरचंदजी शास्त्री, पण्डित सन्मतिजी शास्त्री, पण्डित अखिलेशजी शास्त्री, पण्डित राजकुमारजी सर्राफ, पण्डित सुरेशचंदजी, पण्डित दिनेशकुमारजी एडवोकेट आदि के रात्रि में विभिन्न ग्रंथों के आधार से प्रवचनों का लाभ मिला।

अन्तिम दिन तारण समाज के अध्यक्ष श्रीमंत सेठ अशोककुमारजी समैया की अध्यक्षता में पण्डित पूनमचंदजी छाबड़ा का स्वागत हुआ एवं सम्मान–पत्र दिया गया। संपूर्ण समाज द्वारा टोडरमल स्मारक का आभार व्यक्त किया गया एवं साहित्य की कीमत कम करने हेतु 5001/– रुपये प्रदान किये गये।

संपूर्ण शिविर पण्डित कपूरचंदजी समैया के निर्देशन में संपन्न हुआ।

पंजाब में शिक्षण शिविर

लुधियाना (पंजाब) : यहाँ दिनाँक 24 से 26 दिसम्बर तक टोडरमल महाविद्यालय के स्नातक पण्डित सुदीपजी बरगी एवं पण्डित तपिशजी शास्त्री द्वारा एक आध्यात्मिक शिक्षण शिविर लगाया गया।

शिविर में पंचमेरु तथा छहढाला की कक्षाओं का आयोजन किया गया। इनमें शंका–समाधान एवं तत्त्वचर्चा के माध्यम से जनसामान्य को तत्त्वज्ञान से अवगत कराया गया।

संपूर्ण शिविर में समस्त जैन समाज के साथ श्री अमरेशजी तथा श्री दिलीपजी शाह का प्रमुख सहयोग रहा। **– मृगेन्द्र जैन (टी.वी.99)**

सम्यग्दर्शन शिविर सम्पन्न

दिल्ली : यहाँ विश्वास नगर स्थित श्री दि.जैन चैत्यालय में अ.भा. दि.जैन विद्वत्परिषद दिल्ली के संयोजकत्व एवं श्री दि.जैन युवा संगठन विश्वास नगर के आयोजकत्व में दिनाँक 9 से 17 जनवरी तक सम्यग्दर्शन शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर मुख्यवक्ता डॉ. अशोकजी जैन शास्त्री दिल्ली के अतिरिक्त डॉ. सुदीपजी शास्त्री, डॉ. वीरसागरजी शास्त्री, पण्डित राकेशजी शास्त्री, पण्डित ऋषभजी शास्त्री, पण्डित संदीपजी शास्त्री, पण्डित विवेकजी शास्त्री दिल्ली, पण्डित मनीषजी शास्त्री, पण्डित नेमीचंदजी शास्त्री एवं पण्डित कल्पेन्द्रजी जैन खतौली आदि विद्वानों का लाभ मिला।

श्री कुन्दकुन्द दि. जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर (रजि.) द्वारा संचालित

श्री महावीर विद्या निकेतन

(अध्यात्म के विशुद्ध प्रचार – प्रसार हेतु स्थापित महाराष्ट्र का प्रथम छात्रावास)

अत्यंत हर्ष का विषय है कि महाराष्ट्र की उपराजधानी व आद्यौगिक नगरी नागपुर में श्री कुन्दकुन्द दि.जैन स्वाध्याय मंडल ट्रस्ट, नागपुर द्वारा बालकों में धार्मिक व नैतिक संस्कारों के साथ–साथ विशुद्ध स्व–पर कल्याणकारी दिगम्बर जैनधर्म के संस्कारों के साथ तत्त्वज्ञान से परिचय एवं स्वावलम्बनपूर्वक निराकुलता से जीवन निर्माण में अग्रसर होने के उद्देश्य से दिनांक 6 जुलाई 2008 को श्री महावीर विद्यानिकेतन की स्थापना की गई। विद्या निकेतन में कक्षा आठवीं से दसवीं तक का त्रिवर्षीय पाठ्यक्रम निश्चित किया गया है। इसके द्वितीय सत्र 2009–10 में 35 छात्र अध्ययनरत हैं। तृतीय सत्र दिनाँक 20 जून, 2010 से प्रारंभ हो रहा है।

इस वर्ष कक्षा आठ में 15 विद्यार्थियों को प्रवेश देना निश्चित हुआ है।

क्यों लें प्रवेश ?

1. उच्चकोटि के विद्वानों के सानिध्य में लौकिक एवं धार्मिक शिक्षा देने का सर्व सुविधायुक्त उत्कृष्ट संस्थान।
2. बालकों के धार्मिक एवं लौकिक सर्वांगीण विकास को प्राथमिकता।
3. आवास एवं भोजन की नि:शुल्क सुविधा।
4. छात्रों के मनोरंजन के साथ वाक् कौशल के विकास व ज्ञानप्राप्ति हेतु प्रवचन, कक्षा, गोष्ठियाँ, भाषण, वाद –विवाद आदि ज्ञानवर्धक कार्यक्रमों का आयोजन।
5. छात्रों के बौद्धिक व मानसिक विकास हेतु पुस्तकालय व कम्प्यूटर प्रशिक्षण की व्यवस्था।
6. छात्रों के शारीरिक विकास हेतु नियमित व्यायाम, योग, रुचि अनुसार खेलों की सुविधा।
7. नागपुर के प्रतिष्ठित विद्यालयों में सेमी इंग्लिश (हिन्दी व मराठी) व हायर इंग्लिश मीडियम से अध्ययन की व्यवस्था।
8. स्कूल के अंग्रेजी, विज्ञान, गणित जैसे कठिन विषयों के लिये विशेष अध्यापकों की व्यवस्था।

विद्यानिकेतन का धार्मिक पाठ्यक्रम

कक्षा – 8 (धर्म प्रवेशिका)	कक्षा – 9 (धर्मालंकार)	कक्षा – 10 (धर्म विशारद)
1. बालबोध पाठमाला भाग–1,2,3	1. वीतराग विज्ञान – 1,2,3	1. तत्त्वज्ञान पाठमाला भाग – 1,2
2. छहढाला–पूर्वार्द्ध	2. छहढाला – उत्तरार्ध	2. तत्त्वार्थ सूत्र – 7 से 10
3. तत्त्वार्थसूत्र–अध्याय–1 व 2	3. तत्त्वार्थसूत्र – अध्याय–3 से 6	3. द्रव्य संग्रह
4. आप कुछ भी कहो (स्वयं पठन)	4. भक्तामर स्तोत्र	4. जीवंधर चरित्र (स्वयं पठन)
5. कंठपाठ ह्न जिनेन्द्र पूजन, स्तुतियाँ एवं बाल भावना	5. राम कहानी (स्वयं पठन)	5. धर्म के दशलक्षण – उत्तरार्द्ध
	6. धर्म के दशलक्षण – पूर्वार्द्ध	

प्रवेश प्रक्रिया

कक्षा सात में 60% अंक प्राप्त विद्यार्थी दिनाँक 15 अप्रैल तक प्रवेश फार्म अंक सूची की प्रतिलिपी सहित कार्यालय में जमा करावें एवं बुधवार दिनांक 12 मई से शनिवार 15 मई, 2010 तक आयोजित साक्षात्कार शिविर में पालकों के साथ अनिवार्यरूप से उपस्थित होवें।

संपर्क सूत्र : नेहरू पुतला, इतवारी, नागपुर–440002 (महा.), फोन (0712) 6979257, 2765200 (ऑफिस), अशोक जैन (मंत्री) – 2772378, जयकुमार देवडिया (संयाजक) – 9371270638, सुदीप जैन – 9373289447, पं. अशोक शास्त्री (प्राचार्य) – 9595856422, पं. जितेन्द्र शास्त्री (अधीक्षक) – 9096344987

मोक्षमार्ग प्रकाशक का सार

46 ग्यारहवाँ प्रवचन – डॉ. हुकमचन्द भारिल्ल

(गतांक से आगे...)

देखो, काल का दोष कि वीतरागी जैनधर्म में कुधर्म की प्रवृत्तियाँ पनपने लगी हैं। जैनमत में तो जो धर्मपर्व कहे हैं, उनमें तो विषय-कषाय रूप प्रवृत्ति छोड़कर संयमरूप प्रवृत्ति इष्ट हैं; उसे तो ग्रहण नहीं करते और व्रतादिक का नाम धारण करके नाना शृंगार बनाते हैं; पूजन-प्रतिष्ठादि कार्यों में उपदेश तो यह था कि **'सावद्यलेशो बहुपुण्यराशौ दोषायनालं'**[१] बहुत से पुण्य की राशि (ढेर) में पाप का अंश हो तो दोष अधिक नहीं है, न के बराबर ही है। इसके बहाने पूजा-प्रभावनादि कार्यों में रात्रि में दीपक (बिजली) से व अनन्तकायादिक के संग्रह द्वारा व अयत्नाचार प्रवृत्ति से हिंसादिरूप पाप तो बहुत उत्पन्न करते हैं और स्तुति, भक्ति आदि शुभ परिणामों में नहीं प्रवर्तते या थोड़े प्रवर्तते हैं। इसलिए नुकसान अधिक और लाभ कम या कुछ भी नहीं। ऐसे कार्यों से तो बुरा ही होता है।

देखो, यहाँ पण्डितजी संगीत, नृत्य, गानादि को विषयों का पोषक बताकर बड़ी कड़काई से निषेध कर रहे हैं। पूज्य गुरुदेव श्री कानजी स्वामी के सामने यह सब संभव ही नहीं था; पर आज तो मानो नाच-गाना ही सबकुछ हो गया है।

यदि इन सब प्रवृत्तियों के विरुद्ध थोड़ा-बहुत बोलो तो सभी को लगता है कि यह सब उनके विरुद्ध कहा जा रहा है। नाचनेवाले सोचते हैं - यह बात हमारे विरुद्ध कही जा रही है, नचानेवाले पण्डित सोचते हैं - यह हमारे विरुद्ध कहा जा रहा है, व्यवस्थापकों को लगता है कि यदि इन्द्र-इन्द्राणी और राजा-रानियों को नचायेंगे नहीं तो बोलियाँ कोई क्यों लेगा ? इन्द्र-इन्द्राणियों और राजा-रानियों का काम जैसे नाचना-गाना ही हो। क्या इन्द्र और राजा अपनी वास्तविक सभाओं में नाचते ही रहते होंगे, वह भी अपनी पत्नियों के साथ। अरे, भाई ! इससे उनके गंभीर व्यक्तित्व की महिमा नष्ट होती है।

गुरुदेवश्री कानजी स्वामी कहा करते थे कि लोगों को व्यवहार का पौर चढता है। पौर अर्थात् नशा। इस नाच-गाने का ऐसा नशा चढता है कि कुछ होश नहीं रहता। लोग सारी मर्यादायें तोड़कर उछलने-कूदने लगते हैं। जिनके सामने कभी गर्दन भी ऊँची नहीं की होगी, सदा गर्दन नीची करके बात की होगी; उनके सामने भी महिलायें नाचने-कूदने लगती हैं। मातायें-बहिनें, जिन्होंने हमसे कभी आँख उठाकर बात नहीं की होगी, वे भी धर्म के नाम पर नाचने-कूदने लग जाती हैं। आखिर हमें ही नीची गर्दन करके बैठना पड़ता है। क्या करें मर्यादा रखने के लिए किसी एक को तो गर्दन नीची करनी ही होगी। अरे, भाई ! इसे ही कहते हैं गुरुदेव की भाषा में पौर चढना।

पहले एक नाचता है, फिर दूसरा उठता है; तीसरा, चौथा, इसप्रकार बहुत लोग उठ जाते हैं; पर गंभीर प्रकृति के लोग तब भी बैठे रहते हैं तो लोग उन्हें पकड़-पकड़ उठाते हैं और फिर सभी राग की आग में जल-जल कर नाचने-कूदने लगते हैं और मानते हैं कि हमें आनन्द आ रहा है, धर्म का आनन्द आ रहा है। अरे, भाई ! देखो तो सही कि पण्डित टोडरमलजी उक्त प्रवृत्तियों को कुधर्म कह रहे हैं।

उक्त प्रवृत्तियों ने मेरे चित्त को कभी भी एक सैकिण्ड के लिए भी आकर्षित नहीं किया और अब तो बर्दाश्त भी नहीं होतीं; इसकारण मैंने ऐसे प्रसंगों में बैठना भी बंद सा ही कर दिया है। क्या करें, कोई सुनता तो है नहीं।

अपनी इन प्रवृत्तियों को भक्ति का नाम देनेवाले सौधर्म इन्द्र का सहारा लेते हैं। कहते हैं वह भी तो नाचा था। जानते हैं वह मात्र जन्म-कल्याणक के अवसर पर ही नाचता है, भगवान के समोशरण में नहीं। सम्यग्दृष्टि एक भवावतारी अकेला वही नहीं है, सर्वार्थसिद्धि के अहमिन्द्र और लोकान्तिकदेव भी तो एक भवावतारी सम्यग्दृष्टि ही होते हैं। वे कितना नाचते हैं, कब-कब नाचते हैं ? अरे, भाई ! सभी तीर्थंकर भी तो उसी भव से मोक्ष जानेवाले और सम्यग्दृष्टि होते हैं। वे कितना नाचते हैं और और कब नाचते हैं।

एक बात यह भी गंभीरता से विचार करने की है कि हमारे आदर्श तीर्थंकर भगवान हैं या उनके दरवाजे पर नाचनेवाले सौधर्म इन्द्र ?

अरे, भाई ! हमारे आदर्श तो तीर्थंकर भगवान हैं, अरहंत-सिद्ध भगवान हैं। हम तो अरहंत और सिद्ध भगवान के अनुयायी हैं, आचार्य, उपाध्याय और सर्व साधुओं के अनुयायी हैं, पंचपरमेष्ठियों के अनुयायी हैं, वीतराग धर्म के अनुयायी हैं।

अरे, भाई ! जिन पंचकल्याणकों में हम सीमातीत नाचना-गाना चाहते हैं; उन पंचकल्याणकों में जिनबिम्बों के रूप में हमारे आराध्य अरहंत भगवान की प्रतिष्ठा होती है, तीर्थंकर भगवान की प्रतिष्ठा होती है; सौधर्म इन्द्र की नहीं। **ध्यान रहे अरहंतों की प्रतिष्ठा नाच-गाने में नहीं है, नाच-गाना त्यागने में है; रागभाव में नहीं है, वीतरागता में है; क्योंकि जिनबिम्बों में वीतरागता की ही प्रतिष्ठा की जाती है, रागभाव की नहीं।**

अरे, भाई ! अब तक चार गति और चौरासी लाख योनियों में बहुत नाचे, अब हमें नहीं नाचना है। अब तो इस नाच-गाने

१. पूज्यं जिनं त्वार्चयतोजनस्य, सावद्यलेशोबहुपुण्यराशौ।
दोषायनालं कणिका विषस्य, न दूषिका शीतशिवाम्बुराशौ ।।५८।।
- बृहत् स्वयंभूस्तोत्र

को तिलांजलि देकर अपने में समा जाना है; क्योंकि यही धर्म है।

जिस पंचकल्याणक में विधिनायक भगवान नेमिनाथ होते हैं; उस पंचकल्याणक में वैराग्य के निमित्त के रूप में नेमिनाथ की बारात के नाम पर जो कुछ होता है; वह भी कम विचारणीय बिन्दु नहीं है।

वैराग्य का निमित्त बताने के लिए तो पाण्डाल के गेट से ही बारात का लाना पर्याप्त है; पर नेमिनाथ की बारात का जुलूस नाचते-गाते पूरे बाजार में घंटों तक घुमाना, बारात के स्वागत के नाम पर मार्ग में चाय-पानी की व्यवस्था करना, कार्ड बांटना - यह सब क्या है ? यह सब रागवर्धक क्रियायें हैं या वैराग्यवर्धक ? आश्चर्य तो इस बात का है कि यह सब वैराग्य के प्रसंग में दिखाया जाता है।

इस बारात की वजह से आगे के सभी कार्यक्रम अस्त-व्यस्त हो जाते हैं, वैराग्य के प्रसंग अचर्चित रहकर फीके हो जाते हैं। वैराग्य के दिन का सर्वाधिक महत्त्वपूर्ण समय राग-रंग में ही चला जाता है।

हम सभी को पता है कि गुरुदेव श्री इन नाच-गानों को बिलकुल पसंद नहीं करते थे और टोडरमलजी तो इन्हें स्पष्टरूप से कुधर्म की प्रवृत्ति कह रहे हैं। क्या आपने कभी गुरुदेवश्री को नाचते या किसी को नचाते देखा है या उन्होंने रसपूर्वक किसी को नाचते देखा भी है ?

इस भरत क्षेत्र में दश कोड़ाकोड़ी सागर में इन्द्र मात्र २४ बार ही आकर जन्मकल्याणक के समय नृत्य करता है। दस कोड़ाकोड़ी सागर में दो सागर की आयुवाले सौधर्म इन्द्र न जाने कितने हो जाते होंगे। उसके अनुपात में ये नाचने के शौकीन लोग इस ६०-७० वर्ष की जिन्दगी में नाचते ही रहते हैं। **अरे, भाई ! जैनधर्म नचैयों-गवइयों का धर्म नहीं है। यह तो वीतरागी धर्म है, इसमें वीतरागता की पोषक क्रियायें ही स्वीकृत हो सकती हैं।**

गुरुदेवश्री की उपस्थिति में जो भी पंचकल्याणक हुए हैं, पण्डितश्री नाथूलालजी ने कराये हैं; वे सभी बड़ी ही सादगी और पूर्ण वैराग्य के वातावरण में हुए हैं; पर हमारे देखते-देखते हम कहाँ से कहाँ पहुँच गये हैं - यह भी एक विचारणीय बिन्दु है।

यदि गुरुदेवश्री इन प्रवृत्तियों को पसन्द नहीं करते थे और टोडरमलजी इन्हें कुधर्म कह रहे हैं तो फिर हम इन प्रवृत्तियों को इतना प्रोत्साहित क्यों कर रहे हैं ? उक्त दोनों महापुरुष हमारे परमोपकारी हैं तो हमें कुछ उनकी बात भी तो माननी चाहिए।

अरे, भाई ! गुरुदेवश्री की भावना की पोषक पण्डित टोडरमलजी की इस बात को कौन आगे बढायेगा, कौन संभालेगा ?

गुरुदेवश्री के अनुयायी श्री टोडरमल स्मारक भवन से जुड़े लोग ही तो संभालेंगे, टोडरमल महाविद्यालय में पढने-पढानेवाले विद्वान ही तो संभालेंगे। अब आप ही बताइये कि यदि कुयें में ही आग लग जायेगी तो क्या होगा - इसकी कल्पना आप कर सकते हैं। यदि गुरुदेवश्री के अनुयायी श्री टोडरमल स्मारक भवनवाले भी इन प्रवृत्तियों में बहने लग जायेंगे; इन्हें प्रोत्साहित करने लग जावेंगे तो क्या होगा ?

इन बातों पर गंभीरता से विचार करने की आवश्यकता है।

हम यह बहुत अच्छी तरह जानते हैं कि ऐसे लोगों की भी कमी नहीं है कि जो एक मिनिट में यह कह सकते हैं कि जिसे भगवान की भक्ति का भाव न आये, भक्ति में नाचने-गाने का भाव न आये; वह सम्यग्दृष्टि नहीं हो सकता। वे यह भी कह सकते हैं कि वह तो जैनी भी नहीं है। यह भी हम अच्छी तरह जानते हैं कि वे हमें मिथ्यादृष्टि के साथ-साथ अजैनी भी घोषित कर सकते हैं। उनके पास जितनी भी छोटी-बड़ी गालियाँ होंगी; वे उन सभी का प्रयोग करेंगे।

यह तो आप जानते ही होंगे कि जैनदर्शन की छोटी गाली मिथ्यादृष्टि और बड़ी गाली अभव्य है; क्योंकि जो अभी रत्नत्रयधारी नहीं हैं, सम्यग्दृष्टि नहीं हैं; वे मिथ्यादृष्टि हैं और जो कभी भी सम्यग्दृष्टि नहीं होंगे, रत्नत्रयधारी नहीं होंगे, मोक्ष नहीं जावेंगे; वे अभव्य हैं।

इन छोटी-बड़ी गालियों में मात्र अभी और कभी का ही अन्तर है। जो अभी सम्यग्दृष्टि नहीं, वे मिथ्यादृष्टि और जो कभी सम्यग्दृष्टि न होंगे, वे अभव्य हैं।

हमें मालूम हैं कि इस पर लोगों की तालियाँ भी पिट जावेगी। इसलिए नहीं कि उन्होंने बहुत अच्छी और सच्ची बात कही है; किन्तु इसलिए कि उन्होंने उनके मन की बात कही है।

अरे, भाई ! यह हमारी बात नहीं है; यह टोडरमलजी की बात है, पूज्य गुरुदेवश्री की बात है, जिनवरदेव की बात है कि नाचने-गाने में धर्म नहीं है; क्योंकि नाचने-गाने का भाव रागभाव है और राग तो आग है - यह बात तो आप बहुत अच्छी तरह जानते ही हैं। **(क्रमशः)**

डॉ. भारिल्ल के आगामी कार्यक्रम

19 व 20 फरवरी	ललितपुर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
21 फरवरी	देवगढ	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
22 व 23 फरवरी	घुवारा (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
24 व 25 फरवरी	केलवाडा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
01 मार्च	कोटा	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
9 से 11 मार्च	निसई (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
12 से 14 मार्च	सागर	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
15 व 16 मार्च	खड़ैरी (म.प्र.)	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
17 व 18 मार्च	दमोह	प्रवचन एवं हीरक जयन्ती
25 व 26 मार्च	उदयपुर	महावीर जयन्ती/हीरक जयन्ती
31 मार्च से 4 अप्रैल	मुक्तागिरि	विद्वत् ज्ञान गोष्ठी (सेमिनार)

17 फरवरी 2010, मूल्य : 2/- आर. एन. आई. 31109/77 RJ / J. P. C / FN-61 / 2009-11

हार्दिक बधाई

1. बांसवाड़ा (राज.) : श्री टोडरमल दि.जैन सिद्धांत महाविद्यालय के स्नातक एवं वर्तमान में रा.उ.मा.वि. रैयाना बांसवाड़ा में प्राध्यापक के पद पर कार्यरत **श्री रितेश जैन** को तहसील स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में गढी के तहसीलदार श्री आर.एस. राजपुरोहित ने बोर्ड परीक्षा में शत-प्रतिशत परिणाम एवं शिक्षा के क्षेत्र में अच्छे प्रदर्शन हेतु प्रशस्ति-पत्र प्रदानकर सम्मानित किया।

2. गढी-बांसवाड़ा (राज.) के **प्रधानाचार्य श्री सुशीलकुमारजी जैन** को रा. उ. मा. वि. के प्रांगण में आयोजित तहसील स्तरीय गणतंत्र दिवस समारोह में गढी के तहसीलदार श्री आर. एस. राजपुरोहित ने राष्ट्रीय शैक्षिक सेमिनारों में सहभागिता एवं शैक्षिक शोध कार्यों में उत्कृष्ट प्रदर्शन हेतु प्रशस्ति-पत्र देकर सम्मानित किया।

जैन पत्रकार सम्मेलन सम्पन्न

कोलकाता : यहाँ स्थानीय श्री जैन भवन में अ. भा. जैन पत्र सम्पादक संघ का 23 व 24 जनवरी को दो दिवसीय सम्मेलन समाजसेवी श्री मदनलालजी बज की अध्यक्षता में सानन्द सम्पन्न हुआ। आपने अपने अध्यक्षीय उद्‌बोधन में पत्रकारों से आव्हान किया कि आप समाज में स्वस्थ वातावरण का निर्माण करने में अहम् भूमिका निभायें। संघ के राष्ट्रीय कार्याध्यक्ष डॉ. चिरंजील ाल बगडा ने आगत पत्रकारों का स्वागत करते हुये सभी का परिचय कराया एवं आयोजन हेतु प्राप्त आचार्य श्री वर्द्धमानसागरजी का आशीर्वाद पढकर सुनाया।

इस अवसर पर सम्पादक संघ के महामंत्री श्री अखिल बंसल ने तीर्थों की वर्तमान स्थिति पर चिन्ता प्रगट करते हुये कहा कि हमें तीर्थों पर मंडराते भीतरी एवं बाहरी खतरों तथा उनकी व्यवस्थाओं पर विशेष ध्यान देना चाहिये। उन्होंने पत्र सम्पादक संघ की प्रगति रिपोर्ट प्रस्तुत की।

पत्र सम्पादक संघ के संरक्षक एवं जैन गजट के सम्पादक श्री कपूरचन्दजी पाटनी ने समाज की दशा और दिशा पर विचार प्रगट किये। पत्र सम्पादक संघ के राष्ट्रीय अध्यक्ष श्री रवीन्द्र मालव ने कहा कि हम अपने जैनत्व को भूलकर वैदकीकरण से ग्रस्त होते जा रहे हैं। इन्दौर से पधारे डॉ. महेन्द्र 'मनुज' ने अंक चन्द्रों पर आधारित सिरी भू वलय ग्रंथ की विस्तृत जानकारी दी।

आगामी कार्यक्रम...

विद्वत् ज्ञान गोष्ठी

श्री कुन्दकुन्द कहान पारमार्थिक ट्रस्ट, मुम्बई द्वारा 31 मार्च से 4 अप्रैल तक सिद्धक्षेत्र मुक्तागिरि में डॉ. हुकमचन्दजी भारिल्ल के सान्निध्य में एक विद्वत् ज्ञान गोष्ठी (सेमिनार) का आयोजन होने जा रहा है, जिसका संयोजन पण्डित अभयकुमारजी शास्त्री देवलाली कर रहे हैं। गोष्ठी का आयोजन श्री अनंतभाई शेठ की ओर से किया जा रहा है, इसमें वे स्वयं भी अपने परिवार सहित उपस्थित रहेंगे।

उदयपुर में वेदी प्रतिष्ठा

उदयपुर (राज.) : यहाँ दिनाँक 12 व 13 दिसम्बर को सैक्टर - 8 जे.पी.नगर में वेदी प्रतिष्ठा संपन्न हुयी। श्रीमती सुलोचना अग्रवाल एवं श्री ललितजी सिंघल ने अपने निजी प्लाट पर शुद्ध तेरापंथ आम्नाय अनुसार 1008 भगवान आदिनाथ दिग. जिन चैत्यालय का निर्माण कराया; जिसकी वेदी-प्रतिष्ठा के अवसर पर जाप, याग मण्डल विधान, वेदी शुद्धि, जुलूस एवं प्रवचन का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री के **जिनदर्शन का महत्व** विषय पर मार्मिक प्रवचन हुये।

कार्यक्रम में मुमुक्षु मण्डल, श्री कुन्दकुन्द कहान वीतराग-विज्ञान शिक्षण समिति, अ. भा. जैन युवा फैडरेशन नेमीनाथ कॉलोनी एवं मुमुक्षु मण्डल गारियावास सै.-11 का विशेष सहयोग रहा।

13 दिसम्बर को श्री आदिनाथ भगवान की प्रतिमा को विधानाचार्य डॉ. महावीरप्रसादजी शास्त्री ने श्री ललितजी, रमेशजी एवं सतीशजी सिंघल के कर कमलों से विधिपूर्वक वेदी में विराजमान करवाया। **- जिनेन्द्र शास्त्री**

तरुण शिक्षण शिविर संपन्न

मुम्बई : यहाँ दिनाँक 24 से 26 जनवरी तक श्री कुन्दकुन्द कहान दि. जैन मुमुक्षु समाज ट्रस्ट, भायंदर के तत्त्वावधान में तृतीय तरुण शिक्षण शिविर का आयोजन किया गया।

इस अवसर पर पण्डित शैलेषभाई तलौद ने पंच भाव, पण्डित रजनीभाई दोशी हिम्मतनगर ने नय विषय और पण्डित विरागजी शास्त्री देवलाली ने चार अभाव पर कक्षायें लीं।

इस शिविर का आयोजन युवा विद्वान स्व. पंकजभाई शाह की प्रथम पुण्य स्मृति में गजराबेन बाबूलाल शाह परिवार के सौजन्य से किया गया। प्रात: जिनेन्द्र पूजन एवं गुरुदेवश्री के प्रवचन के पश्चात् विभिन्न कक्षाओं का आयोजन होता था।

अंतिम दिन रत्नत्रय विधान का आयोजन किया गया। विधि-विधान का संपूर्ण कार्य पण्डित विरागजी शास्त्री ने किया। **- किरीटभाई गांधी**

प्रकाशन तिथि : 13 फरवरी 2010

प्रति,

सम्पादक : **पण्डित रतनचन्द भारिल्ल** शास्त्री, न्यायतीर्थ, साहित्यरत्न, एम.ए., बी.एड.
प्रबन्ध सम्पादक : **पण्डित संजीवकुमार गोधा**, डबल एम.ए.(जैनविद्या व तुलनात्मक धर्मदर्शन; इतिहास), नेट, एम.फिल (जैन दर्शन)
प्रकाशक एवं मुद्रक : **ब्र. यशपाल जैन** द्वारा जैनपथप्रदर्शक समिति के लिए जयपुर प्रिण्टर्स प्रा.लि., जयपुर से मुद्रित तथा त्रिमूर्ति कम्प्यूटर्स, श्री टोडरमल स्मारक भवन, ए-४, बापूनगर, जयपुर से प्रकाशित।

यदि न पहुँचे तो निम्न पते पर भेजें -
ए- 4 बापूनगर, जयपुर - 302015 (राज.)
फोन : (0141) 2705581, 2707458
E-Mail : ptstjaipur@yahoo.com **फैक्स :** (0141) 2704127